International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : उपन्यासों में नारी पात्रों के रूप निरूपण का अध्ययन

ज्योत्सना नारायण
NET, JRF
Delhi University, Delhi

सारांश

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के प्रायः सभी नारी–पात्र सुन्दर हैं। यदि किसी के मुख–सौन्दर्य या वर्ण–प्रभा में कुछ न्यूनता है तो सौन्दर्य के अन्य विधायी–तत्वों में वृद्धि करके उसकी पूर्ति की गई है। इन नारी–पात्रों में अधिकतर तो गौरवर्णाएँ हैं और कुछ श्यामायें भी हैं। राज–बालायें प्रायः गौरागी हैं। निम्न जाति की नारियों को श्याम वर्ण का निरूपित किया गया है। देव–मन्दिर स्वरूपा नारी देह को न तो अपावन देख सकता था और न असुन्दर ही। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के अधिकतर नारी–पात्र गौर–वर्ण के हैं। केवल कुछ निम्न जाति में जन्मी नारियाँ ही श्याम वर्णायें हैं। हाँ इतना अवश्य है कि ये श्याम वर्णायें भी सुन्दरियाँ हैं और आकर्षण–गुण–सम्पन्न हैं इससे भी अधिक वह रूपवती और गुणवती भी हैं।

मूल शब्द : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, उपन्यास, नारी पात्र, रूप निरूपण।

प्रस्तावना :

बाणभट्ट की आत्मकथा की निपुणिका अधिक सुन्दरी नहीं है। उसका रंग भी साफ नहीं है। जब वह बाण की नाटक–मण्डली में सम्मिलित होने आयी तब ''उसका रंग शेफालिका के कुसुम–नाल के रंग से मिलता था।'' निपुणिका अभिनय सीखने लगी वह अभिनय कला में कुशल हो गयी थी। उज्जयिनी में बाण लिखित प्रकरण के अभिनय के आयोजन में निपुणिका ने अद्भूत कला का प्रदर्शन किया था। वह जब रंग मंच से लौटी तब उसकी भावभंगी अनूठी थी। ''उसका दाहिना हाथ शिथिल श्यामलता के समान झूल पड़ा था।'' समर्पण विफला निपुणिका बाण की नाटक मण्डली से भाग पड़ी और अपने निष्ठुर प्रेमी बाण के चिर जीवन की कामना से उज्जयिनी भी छोड़ आयी। वह बाण से छिपती फिरी और बाण उसे खोजता रहा। छः वर्ष बाद बाण ने स्थाणीश्वर में, पान बेचती हुई निपुणिका को खोज ही लिया। बाण एक नातिकमनीय मूर्ति रमणी की बाणी पर चौंकते हैं, उसकी पुकारा पर मुड़ते हैं, उसे पहचानते हैं, वह निपुणिका थी। ''उसके मुखमण्डल पर तारूण्य था उसकी दीप्ति धुंधली पड़ गयी थी, जैसे धुंआ उगलती हुई

दीप–शिखा हो।'' स्थाणीश्वर में बाण निपुणिका के निवास पर पहुंचा। स्त्रोत पाठ करती निपुणिका की अंग–प्रभा बाण को बड़ी मनोहर लगती है।

बौद्ध–बिहार में भट्टिनी के ध्यान–स्तिमित नयनों को देखकर जान पड़ता था कि ''महावराह की अपूर्व शोभा से विस्मय विमूढ़ होकर दो चपल खंजन–शावक चित्र लिखित से स्थिर हो रहे हैं। भट्टिनी की बड़ी–बड़ी आँखें अपना अपमान आप ही थीं। सम्मोहन ग्रस्त बाण की सुश्रुषा भट्टिनी की ''जागर–खिन्न लाल आँखें धूल–लुंठित पलाश–पुष्प के समान, आतप की भांति दर्शक को व्यथित, खिन्न और उदास बना देती थी। भद्रेश्वर में भट्टिनी की (राज्यश्री का पत्र पढ़ने के बाद) सकरूण बड़ी–बड़ी मनोहर आँखें भींगे हुए खंजन–शावक की भांति हतचेष्ट हो गयी थी।

वर्ण–निरूपण

बाणभट्ट की आत्मकथा की राजबाला चन्द्र दीधिति गौरांगी है। शरदकालीन मेघपुंज में अन्तरित चन्द्रकला–सी उसकी अंग्रप्रभा है। उसकी कुंकुम गौर कांति अत्यन्त मनोहर है। ''भट्टिनी की धवल कांति दर्शक के नयन–मार्ग से हृदय में प्रविष्ट होकर समस्त कलुष को धर्वलित कर देती थी मानो स्वमन्दाकिनी की धवल–धारा समस्त कलुष कालिका का क्षालन कर रही हो।

पुनर्नवा की गणिका मुंजला शोभा–स्त्रोतस्विनी है। वह राजकोप–शमन के लिए देवरात की सहायता की याचना करने हेतु उनके आश्रम की ओर पैदल अस्त–व्यस्त दशा में चलती हुई भी नयनभिराम लगती है। ''मानो चन्द्रमा की स्निग्ध ज्योत्सना ही धरती पर उतर आयी है।'' मंजुला की जायी मृणाल अपूर्व सुन्दरी है। तीन वर्ष की फूल सी कोमल बालिका को देवरात झूले में से उठाते हैं ''मानो पूनम के चाँद को राहु ने ग्रस लिया हो।'' देवरात–पत्नी शर्मिष्ठा भी गौर–वर्णा थी क्योंकि क्योंकि वह और मंजुला वयसु वरन तनु एक थी। चन्द्रा भी गौरांगी है। उसको सुमेर काका मृणाल के द्वार पर देखते है। उसके गोल गोरे मुख पर केश लटिया गये थे। वह विन्ध्य के साधु से मिलकर लौटने के बाद साधुओं की लम्पटता की चर्चा मृणाल से करती है। तब मृणाल से चुहल करती हुई कहती है।–''गन्ध के साथ ऐसा वर्ण, ऐसी कांति, ऐसी प्रभा, ऐसी सम्मोहन–चारूता, एक साथ मिल जाये, तो ब्रह्म का भी मन एक बार डोल जाये।''

अंग निरूपण

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने उपन्यासों में नारी का अंग निरूपण बहुत विस्तार से किया है। उनकी नारियाँ सर्वत्र मनोहर हैं, श्रृंगार की प्रतिमायें हैं। परन्तु ऐसी श्रृंगार प्रतिमा जो वासना नहीं श्रद्धा जागृत करती हैं। उनके नारी पात्र कहीं तुलसी की सीता के समान है तो कहीं प्रसाद की श्रद्धा की तरह। उनके बाह्य रूप उनके अंतर की उदारता की प्रकटित करते हैं।

केश वर्णन

आचारी द्विवेदी की नायिकाओं का केश–वर्णन अत्यंत स्वाभाविक और विस्तृत है। उनकी नारियों के केश घने–मेचक, सर्पिल, कोमल तथा भ्रमर–श्याम है। ''स्थाणीश्वर में पूजा–निरता निपुणिका के कुन्तल जाल इस प्रकार विलुपित हो उठते थे, मानो महावराह के वरण–प्रांत में गिर पड़ने को व्याकुल हो उठे हों।'' भद्रेश्वर में सद्यस्नाता आर्द्रकेशा निपुणिका के मुख पर–''आर्द्रकेश ऐसे लग रहे थे मानो प्रभातकालीन चन्द्र–मण्डल के पीछे सजल जलधर लटके हों।''

मुख–वर्णन

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों के मुख के प्रति पारंपरिक चन्द्रमा, कमल, दीपशिखा आदि उपमानों का प्रयोग किया है। बाणभट्ट की आत्मकथा की निपुणिका का स्थाणीश्वर में पान बेचने के समय का चित्रण करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं–''उसके मुख–मण्डल पर तारूण था परंतु उसकी दीप्ति धुंधली पड़ गयी थी, जैसे धुंआ उगलती दीप–शिखा हो। सुचरिता की सास का मुख काशी में बाण से भेंट करते समय कमल पुष्प के समान खिन्न था। बौद्ध बिहार में उपस्थित महामाया का गैरिक वस्त्रों से कुण्डलित मुख–मण्डल धातुमयी अधित्यका के मध्य कुसुमित आरग्वध झाड़ के समान था। उनके मुख को लेखक ने ''कमल–कौरक के समान लम्बा सा'' बताया है।

नेत्र–निरूपण

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बाण भट्ट की आत्मकथा के उपसंहार में नेत्र वर्णन की प्रधानता को स्वीकार किया है। उनकी रचनाओं में नेत्र वर्णन की प्रचुरता तो है किन्तु उनकी नारियों के नेत्र बिहारी की नायिकाओं से मद्रभरे नही है, 'नासा मोरि नचाई दृग' वाला चित्रण उन्होंने नहीं किया है। उनकी नायिकाओं के नेत्रों में जहाँ श्रृंगार का भावन है वहाँ गोस्वामी तुलसीदास जैसा खंजन–मंजु तिरीछे नयनन' का भाव है। आचार्य के नारी–पात्रों के नेत्रों में सम्मोहन तो है किन्तु निमंत्रण नहीं, वासना नहीं, बाण भट्ट की आत्मकथा की नायिका निपुणिका की सबसे बड़ी चारूता–सम्पत्ति उसकी आँखें और अंगुलियाँ ही थीं। उज्जयिनी से भागी निपुणिका को बाण छः वर्ष बाद स्थाणीश्वर से मिला तब ''उसकी कोटरगत आँखें मानो उद्वेल वारिधारा से परिपूर्ण होकर प्रफुल्ल पुण्डरीक के समान विकसित हो गयी थी। बौद्ध बिहार में उसी निपुणिका की कोटर–शायिनी आँखों में जागर खेद देखकर बाण को लगा था–''मानो प्रफुल्ल कांचनार–कुसुम पर चन्द्रमा की धवल–प्रभा पड़ी हुई है।

भौहें

गंगाधारा–विनिर्मता भट्टिनी के भ्रू युगल और भी जिन्ह हो गये थे और जब वह भद्रेश्वर में निपुणिका के विषय में बाण से बात करने को प्रस्तुत होती है तब उसकी

कातरता के कारण शिथिल बनी हुई ''भ्रूलताये मानो–जन्म देवता के भग्न–चाय की भांति भीषण मनोहर शोभा का विस्तार कर रही थी।'' आचार्य द्विवेदी जी ने भीषण मनोहर का कैसा अनोखा विरोधाभास प्रस्तुत किया है। चारू चन्द्रलेख में चन्द्रलेखा की भौंहें राजा को दो प्रतिभटों के काले धनुष जैसी लगती है। राजा को मैना की कान तक फैली हुई मसृण भ्रू–लताओं के नीचे अरूणायित नेत्र सुन्दर लगते हैं।

अधर

भट्टिनी के आताम्र अधराष्ठ बाण का अशोग किशलय के समान दिखायी पड़ता है। भद्रेश्वर में राज्यश्री के पत्र को पढ़कर अपमान का अनुभव करती हुई भट्टिनी के –बन्धुजीव पुष्प के समान फीके पड़ गये थे। स्थाणीश्वर के निकट स्कन्धवार में कुमार कृष्णवर्द्धन को भाई के रूप में पाकर भट्टिनी के अधरों में बन्धक–बंधुता और भी अधिक निखर आयी थी।

प्रतिनायिका रूप

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नायक–नायिका प्रति नायिका का रूढ़ त्रिकोण अप्राप्त है। बाणभट्ट की आत्मकथा और चारू चन्द्रलेखा मैना तीन–तीन प्रधान हैं। ये पात्र परस्पर कोई त्रिकोण नहीं बनाते। इसमें न कोई द्वन्द्वभाव है, न संघर्ष। इन पात्रों को एक रेखा के तीन बिन्दु कहा जा सकता है। हाँ, बाण और सातवाहन नामक नायकों के निपुणिका भट्टिनी तथा चन्द्रलेखा मैना के दोनों हाथ माने जा सकते हैं। हाँ विचारणीय बात यह हो सकती है कि इनमें से कौन दायाँ हाथ है और कौन बाँया। अतः भट्टिनी को प्रतिनायिका मानने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। निपुणिका के मन में भट्टिनी के लिये अनुजा–सा स्नेह और स्वामिनी सी श्रद्धा है। भट्टिनी निपुणिका के प्रति कृतज्ञ है उसका सम्मान करती है। अस्तु भट्टिनी को आत्मकथा की प्रति नायिका नहीं कहा जा सकता हाँ उसे सहनायिका माना जाना संगत बात होगी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नारी के रूप निरूपण के अंतर्गत उसका नख से लेकर शिर तक वर्णन किया है। द्विवेदी जी ने चारों उपन्यासों में नारी पात्र रूप वर्णन में आद्वितीय है। पुनर्नवा की विरह व्यथित मृणाल के उदास मुख पर उसके केश लेटिया कर एक वेणी बने हुये थे। चन्द्रा भी परम सुन्दरी है। विन्ध्य के सिद्ध, बाबा उससे कहते हैं–तेरे केश घन–कुंचित है, ये तो अखण्ड सौभाग्य की सूचना देते हैं।

पुनर्नवा की मंजुला प्रथम राज्योत्सव में नृत्यमग्न थी। उसका मुखमण्डल चारियों के वेग से इस प्रकार घूम रहा था कि ''जान पड़ता था शत–शत चन्द्र मण्डल ही आरत्रिक प्रदीपों की अराल–माला में गुंथकर जगर–मगर दीप्ति उत्पन्न कर रहे थे। मृणाल के लिए

भी आचार्य ने अनूठी उपमा की योजना की है। अपने बाल–क्रीड़ा संगिनी मृणाल से तीन वर्ष तक अलग रहने के बाद आर्यक ने उसे गुरू देवरात के आश्रम पर देखा। युवती हो आयी मृणाल के दुग्ध–भाण्ड को अप्रत्याशित ताप मिल गया हो। चन्द्रा का मुख भी चन्द्रमा के समान है। उससे मृणाल कहती है–तुम्हारा यह प्रफुल्ल मल्लिका सा रूप और उसकी मोहक सुगन्ध तुम्हारा निश्छल अनुराल जादू के समान प्रभाव डालने वाला है। इस प्रकार सम्पूर्ण अंगों के निरूपण में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के नारी पात्रों में मनोहरता के साथ शालीनता और संयुक्त है। शील–समन्वित सान्दर्य, श्रद्धज्ञ, उत्पादक सौन्दर्य का चित्रण करना ही लेखक का लक्ष्य है।

संदर्भ सूची :

1. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 17.
2. वही पृष्ठ 19
3. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 17
4. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 26
5. चारू चन्द्रलेख, पृष्ठ 142
6. वही पृष्ठ 225.
7. पुनर्नवा, पृष्ठ 20
8. वही पृष्ठ 28.
9. बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 16.